



Centre for Promotion of  
Arts and Sciences

# हम सब

त्रैमासिक न्यूज़लेटर

इश्यूनं 2 | अक्टूबर 2024-दिसंबर | आयतन 1



फिरदौसी के शाहनामा का एक पता

## इस अंक में

संपादक के डेस्क से

खुदा बख्श

विशेष लेख

कला-विज्ञान

कविता

## उद्धरण योग्य उद्धरण

"मन एक छतरी की तरह है।

यह तब काम करता है जब यह  
खुला होता है"।

जेम्स जीन्स

## संपादक के डेस्क से

इस पत्र के माध्यम से हमारा उद्देश्य उन महान व्यक्तियों को जीवंत करना है जो हमारे बीच रहते थे, विभिन्न सामाजिक समूहों से संबंधित थे, और जिन्होंने समाज के कल्याण के लिए अत्यधिक योगदान दिया। जैसा कि समाचार पत्र के पहले अंक में उल्लेख किया गया है, बिहार अध्याय के साथ एक शुरुआत की गई है। हम बाद में अन्य राज्यों में जाएंगे।

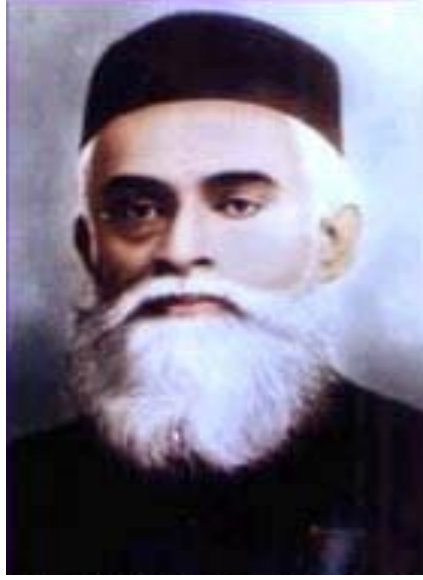
चूंकि इनमें से कुछ महापुरुष प्रसिद्ध हैं और अक्सर पाठ्य पुस्तकों में उनका उल्लेख किया जाता है, इसलिए हमारा उद्देश्य यहां उन व्यक्तित्वों को शामिल करना है जिन्हें उनका हक नहीं दिया गया है। इस अंक में हम खुदा बख्श के जीवन और योगदान को शामिल करते हैं जो पटना में उनके नाम पर प्राच्य पुस्तकालय के लिए प्रसिद्ध हैं।

इस अंक में विशेष अनुच्छेद **बिहार में वार्षिक बाढ़** पर है। उत्तर बिहार ने इस साल सितंबर (2024) के महीने में सबसे खराब बाढ़ का अनुभव किया। जान-माल का भारी नुकसान हुआ है। कहने की जरूरत नहीं है कि बाढ़ प्रभावित लोगों के कष्टों को कम करने के लिए निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए। हम अपने पाठकों को इस संदर्भ में 'आउट-ऑफ-द-बॉक्स' सिफारिशें 'hello@kalavig.com' भेजने के लिए आमंत्रित करते हैं। हम सुझावों को समेकित करेंगे और उन्हें उपयुक्त अधिकारियों को भेजेंगे।

'कला-विज्ञान' - उपखंड 'आर्ट्स कॉर्नर' में हम 'बावन वर्षों के बाद इंग्लैंड का पुनर्दर्शन' शीर्षक वाले यात्रा वृत्तांत पर एक संक्षिप्त विवरण प्रदान करते हैं। इसी तरह उप-धारा 'साइंस कॉर्नर' के तहत, हम केंद्र द्वारा हाल ही में प्रकाशित पॉडकास्ट के बारे में संक्षेप में चर्चा करते हैं। 'कविता' के अंतिम खंड में एक बार फिर मनोज रंजन सिन्हा की लिखी कविता है।

शरत कुमार

## खुदा बख्श



(1842-1908)

खुदा बख्श लाइब्रेरी मौलवी मोहम्मद बख्श और उनके शानदार बेटे खुदा बख्श के संग्रह से निकली। ब्रिटिश संग्रहालय ने एक बार खुदा बख्श को उनके संग्रह के लिए एक आकर्षक प्रस्ताव दिया, लेकिन उन्होंने यह कहते हुए मना कर दिया ...

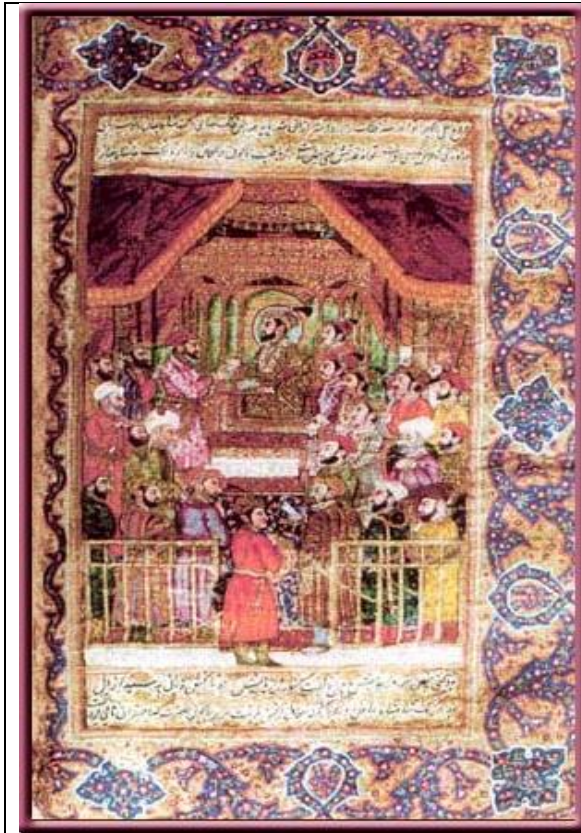
"नहीं, संग्रह पटना के लिए है और उपहार पटना जनता के चरणों में रखा जाएगा"।

पटना और कलकत्ता में शिक्षित, खुदा बख्श ने एक कानूनी व्यवसायी के रूप में अपना करियर शुरू किया। उन्हें 1880 में पटना का सरकारी वकील नियुक्त किया गया था और बाद में 1895 में हैदराबाद में निजाम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के पद पर तीन साल की अवधि के लिए पदोन्नत किया गया था।

खुदा बख्श ने अपनी पुस्तकों का संग्रह और पुस्तकालय भवन जनता को दान कर दिया, और बंगाल सरकार को इसका ट्रस्टी बनाया गया। ट्रस्ट डीड के अनुसार इसे शुरू में 'ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी' नाम दिया गया था। हालांकि, लोगों ने उनकी उदारता को देखते हुए उनके नाम को आगे बढ़ाया। तब से, इसे आधिकारिक तौर पर **खुदा बख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी** के रूप में जाना जाता है। पुस्तकालय में अरबी, फारसी, उर्दू, तुर्की, हिंदी और संस्कृत में 21,000 से अधिक पांडुलिपियां हैं और साथ ही ताड़-पत्तियों पर कुछ पांडुलिपियां भी हैं। इसके अलावा, इसमें विभिन्न भाषाओं और विभिन्न विषयों में 2.5 लाख से अधिक मुद्रित पुस्तकें हैं।

पुस्तकालय इस्लामी अध्ययन, तिब्ब (यूनानी चिकित्सा), तज़किरा (जीवनी), तसव्वुफ़ (इस्लामी रहस्यवाद), तुलनात्मक धर्म, मध्यकालीन इतिहास, दक्षिण पूर्व एशियाई इतिहास, पश्चिम एशियाई इतिहास, मध्य एशियाई इतिहास, मध्यकालीन विज्ञान, स्वतंत्रता आंदोलन पर साहित्य और राष्ट्रीय एकता के साथ-साथ उर्दू, फारसी और अरबी साहित्य में माहिर हैं। पुस्तकालय को की स्थिति में उठाया गया था

1969 में संसद के एक अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय महत्व का एक संस्थान। आज यह भारत सरकार के संस्कृति विभाग के अधीन एक स्वायत्त निकाय है। इसकी दुर्लभ संपत्ति में समृद्ध रूप से सचित्र 'तारिक-ए-खानदान-ए-तिमुरिया' है, जो दुनिया की एकमात्र प्रति है, जिसमें जहांगीर के लेखन के साथ 'अकबर द ग्रेट' के 132 सुंदर चित्र हैं।



पादशाह नमः (17 वीं शताब्दी) का एक पन्ना। पेंटिंग में सम्राट शाहजहां को मयूर सिंहासन पर बैठे, राजकुमारियों और रईसों को पुरस्कार देते हुए दिखाया गया है।

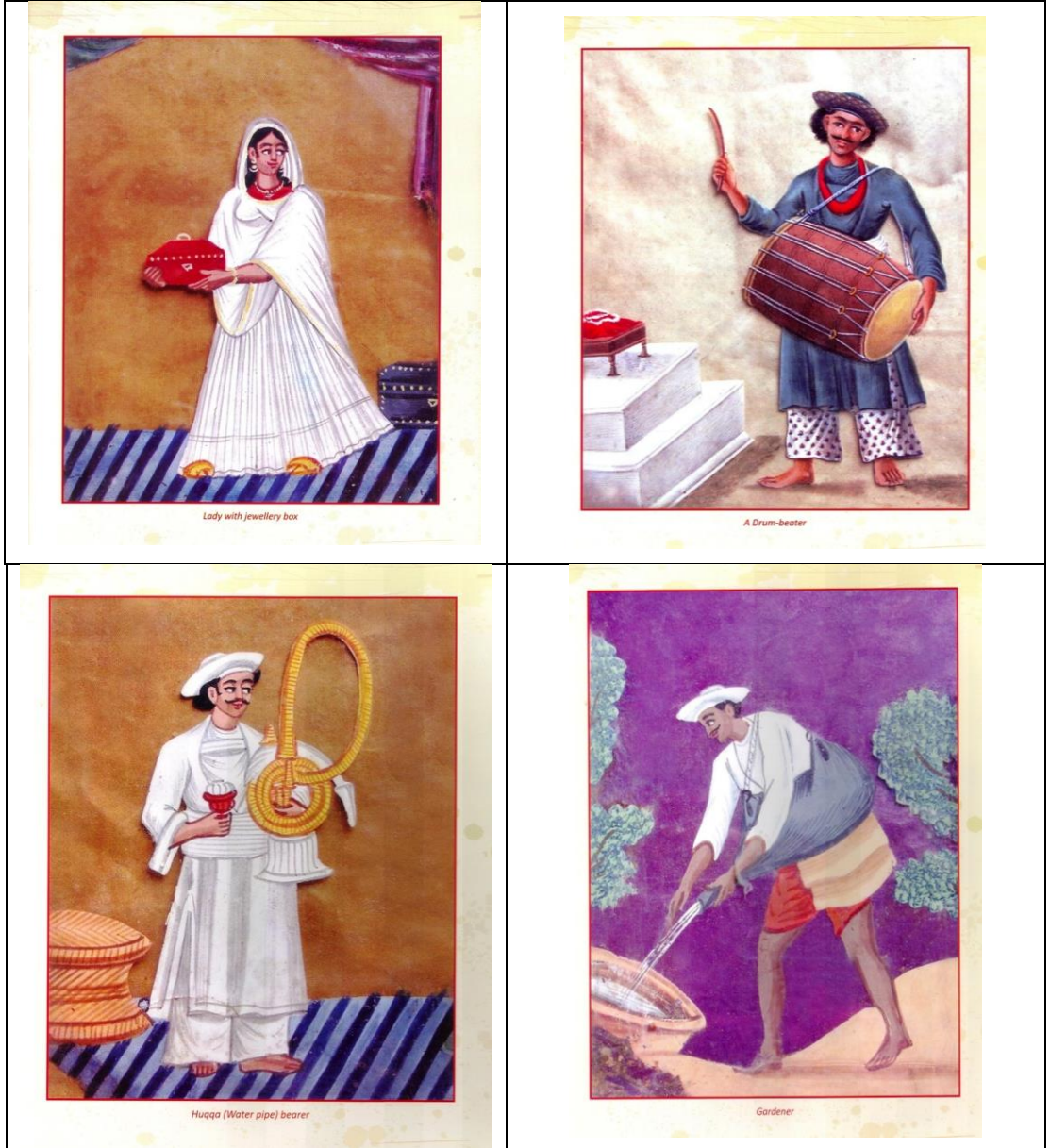


आवरण पृष्ठ: महाराजा रणजीत सिंह (18वीं शताब्दी) की लेखा पुस्तिका

### पटना क्लम (पटना के कलाकारों द्वारा मध्यकालीन पेंटिंग्स)

मुगल सम्राट औरंगजेब (1618 -1707) ने अपने पोते राजकुमार अजीम को बिहार का राज्यपाल (1703 -1712) नियुक्त किया। उन्होंने राजधानी पटना का नाम बदलकर **अजीमाबाद** कर दिया और बड़े पैमाने पर शहर का सौंदर्यीकरण किया। उन्होंने शहर को 'दूसरी दिल्ली'

बनाने का इरादा किया। प्रिंस अजीम, इसके अलावा, चित्रकारों को संरक्षण दिया; जिनमें से कुछ मुर्शिदाबाद से आए और पटना में बस गए। यह कला वर्षों में फली-फूली और पटना क्लम के नाम से जानी जाने लगी। पटना क्लम के कुछ चित्र नीचे दिखाए गए हैं।



## विशेष लेख

### बिहार में वार्षिक बाढ़

शरत कुमार

बिहार के कुल भौगोलिक क्षेत्र का *बहतर प्रतिशत* भाग 68,800 वर्ग किलोमीटर के बराबर बाढ़ प्रवण है। उत्तर बिहार में इस साल आई बाढ़ बिहार की सबसे भीषण बाढ़ में से एक है। अपने घरों को छोड़ने के लिए मजबूर लोगों की परेशान करने वाली दृष्टि, पशुधन को सुरक्षित स्थानों पर ले जाने की परेशानी, पीने के पानी की कमी और बाढ़ के परिणामस्वरूप खाने के लिए कुछ भी नहीं बचा है, सभी को मीडिया और विभिन्न व्यक्तियों द्वारा वीडियो पर कैद किया गया है। *इस साल बाढ़ से हुई तबाही को प्रत्यक्ष रूप से देखने के लिए निम्न लिंक पर जा सकते हैं।*

<https://youtu.be/ZAKvOTfyJKA?si=coe0dM4nQsv7abGS>

हिमालयी क्षेत्र में भारी बारिश के परिणामस्वरूप, बैराज को बचाने के लिए बीरपुर बैराज के सभी स्लुइस गेट खोलने पड़े, जिसके कारण बिहार के मैदानी इलाकों में छह लाख क्यूसेक से अधिक पानी छोड़ना पड़ा। वाल्मीकि नगर बैराज और अन्य बैराजों पर सभी स्लुइस गेट खोलने के साथ, इससे उत्तर बिहार के मैदानी इलाकों में पानी की बाढ़ आ गई, जिससे पूर्वी चंपारण, शिवहर, सीतामढ़ी, कटिहार, मधुबनी, वैशाली, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, समस्तीपुर, मधेपरा, सुपौल, सहरसा, खगड़िया, बेगूसराय और भागलपुर जिलों में गांव के बाद गांव डूब गए। (इस संदर्भ में नीचे दिए गए लिंक को देख सकते हैं)

<https://youtu.be/Ho0A8s-rNtg?si=3nXLseFjaiER2RfY>

बिहार में बाढ़ हर साल आम तौर पर अगस्त और सितंबर के दो मानसून महीनों (भारतीय राष्ट्रीय कैलेंडर के तहत भद्रा – अश्विन) के दौरान होती है। उन्होंने कहा, 'उत्तर बिहार में बाढ़ की समस्या अधिक गंभीर है, जहां व्यावहारिक रूप से पूरा क्षेत्र बाढ़ प्रवण है। इस क्षेत्र में छह प्रमुख नदियां गंडक, बूढ़ी गंडक, कमला बलान, बागमती, कोसी और महानंदा हैं। दक्षिणी बिहार को भी गंगा, सोन, पुनपुन के कारण बाढ़ का सामना करना पड़ता है लेकिन समस्या उत्तर की तुलना में कम गंभीर है' (कुमार, 2020)

इस वर्ष की बाढ़ (2024 में) से पहले बिहार में सबसे बड़ी बाढ़ 1975, 1978, 1987, 1993, 2004, 2007, 2008, 2014 और 2017 में आई थी। 1975 की बाढ़ ने राजधानी पटना के एक बड़े हिस्से को जलमग्न कर दिया और दो सप्ताह के बाद ही इन क्षेत्रों से पानी कम हो गया। 2008 की बाढ़ सबसे विनाशकारी बाढ़ में से एक थी क्योंकि कोसी नदी पर बीरपुर बैराज के पूर्वी एफलक्स बांध में दरार के कारण कोसी तटबंध के संरक्षित पक्ष पर रहने वाले लोगों के घरों में बाढ़ का पानी अप्रत्याशित रूप से घुस गया था।

चूंकि उत्तर बिहार की सभी प्रमुख नदियाँ नेपाल से निकलती हैं और इन नदियों के जलग्रहण क्षेत्र का बड़ा हिस्सा उच्च हिमालयी क्षेत्र में स्थित है, इसलिए मानसून के मौसम में मैदानी इलाकों में उतरते समय वे भारी मात्रा में पानी ले जाती हैं। इस प्रकार ये सभी नदियाँ इन दो महीनों के दौरान अपने किनारों को उखाड़ फेंकती हैं और पूरे भूमि क्षेत्र को जलमग्न कर देती हैं। पाठक इन नदी घाटियों की स्थलाकृति को समझने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर जा सकते हैं।

<https://youtu.be/BvLLKfkxxOE?si=4rltywiA1XAR7n5L>

चूंकि उत्तर बिहार में लगभग 78 प्रतिशत घर "कच्चे घर" (झोपड़ी) हैं, ये बाढ़ के दौरान आसानी से बह जाते हैं। जान-माल की हानि, खड़ी फसलों, पशुधन के संदर्भ में नुकसान, घरेलू सामान परेशान करने के साथ-साथ परेशान कर रहे हैं। बिहार सरकार के बाढ़ प्रबंधन सूचना प्रणाली प्रकोष्ठ के अनुसार, इसके अलावा, बिहार की बाढ़ को चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

**कक्षा I: फ्लैश फ्लड-** उच्च हिमालय (नेपाल में) में वर्षा के कारण होने वाली बाढ़, कम समय (8 घंटे) के साथ और बाढ़ के पानी के तेजी से घटने की विशेषता है।

**कक्षा II: नदी की बाढ़-** 24 घंटे का लीड समय और एक सप्ताह या उससे अधिक समय में बाढ़ के पानी के घटने की विशेषता है।

**कक्षा III: नदी संगम में जल निकासी की भीड़-** 24 घंटे से अधिक के लीड समय की विशेषता है और पूरे मानसून के मौसम तक चलती है (यानी बाढ़ के पानी के घटने में 3 महीने लगते हैं)।

**चतुर्थ श्रेणी: स्थायी जलभराव क्षेत्र।**

सौभाग्यवश, आज भारत में एक राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण है जिसके अध्यक्ष प्रधानमंत्री हैं। सभी राज्यों में इसकी शाखाएँ हैं; इस प्रकार बिहार में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (बीएसडीएमए) है। बाढ़ के दौरान, राज्य के सभी विभाग चाहे वह पुलिस, खाद्य और सार्वजनिक वितरण, स्वास्थ्य, पशुपालन, ग्रामीण विकास के साथ-साथ जिला प्रशासन हो, लोगों की रक्षा और राहत प्रदान करने के लिए अपना अधिकतम प्रयास करने के लिए एकजुट होकर काम करते हैं।

उत्तरी बिहार में बाढ़ की समस्या के दीर्घकालिक समाधान के संबंध में, कुछ सुझाव दिए गए हैं: (ए) जलवायु परिवर्तन में अध्ययन करना, (बी) नेपाल में वर्षा और अपवाह गेज स्टेशनों की स्थापना, (सी) नदी व्यवहार अध्ययन करना, (डी) मौजूदा बाढ़ नियंत्रण संरचनाओं के इंजीनियरिंग डिजाइन में सुधार (कुमार, 2020)। इनमें से एक सुझाव नेपाल के हिमालयी क्षेत्र में कोसी और अन्य नदियों पर ऊंचे बांधों के निर्माण से संबंधित है। तथापि, उच्च बांधों का निर्माण विवादास्पद है क्योंकि नेपाल उच्च भूकंपीय क्षेत्र में आता है और ऐसे बांधों को भूकंप से बहुत अधिक खतरा होता है।

शायद, नेपाल क्षेत्र में बड़े पैमाने पर वनीकरण के लिए उच्च बांधों का निर्माण करने के लिए एक बेहतर विकल्प होगा। यह अधिक लागत प्रभावी भी होगा। कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, इसके अलावा, बिहार के बाढ़ प्रवण क्षेत्रों में लोगों को अपने घरों को ऊंचे प्लेटफार्मों (मचान) पर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे उनके घरों में बाढ़ का पानी घुसने का खतरा कम हो जाएगा। लेकिन यह उनके मवेशियों और पशुओं की रक्षा के लिए पर्याप्त नहीं है। हर साल बिहार में बाढ़ के कारण होने वाली पीड़ा को कम करने के लिए लीक से हटकर सुझावों के साथ आना सार्थक हो सकता है।

हवाला:

कुमार, बिभास\* (2020), "फ्लड्स: संकट ऑफ बिहार", द नेशनल सेमिनार ऑन ट्रांसफॉर्मिंग बिहार: चैलेंजेज एंड स्ट्रैटेजीज, काउंसिल फॉर डेवलपमेंट ऑफ बिहार एंड झारखंड, नई दिल्ली।

- बिभास कुमार पूर्व अध्यक्ष, केंद्रीय जल आयोग, जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार हैं।

## कला-विज्ञान

### कला कॉर्नर

जुलाई-सितंबर की अंतिम तिमाही में हमें मीरा वर्मा का 'बावन वर्षों के बाद इंग्लैंड का पुनर्दर्शन' शीर्षक से यात्रा वृत्तांत प्राप्त हुआ। जैसा कि वह उल्लेख करती है, यह 'अनिवार्य रूप से कोवैट्टी (इंग्लैंड) में ब्रे लेन में घर के लिए स्मृति लेन के नीचे एक उदासीन यात्रा थी, जो हमारी शादी के बाद हमारा पहला घर था'। बीते ज़माने को फिर से जीने की कोशिश में वह कहती है: 'लंदन के बाहर, अंग्रेज़ देहात का इलाका जहाँ हरे-भरे घास के मैदान थे, वे पहले की तरह ही खूबसूरत थे। और भेड़ और मवेशी, या कभी-कभी घोड़े, आलस्य से चरते हुए या बस घास पर लेटे हुए, हल्की बूँदा बांदी या बारिश के थोड़े समय से बेपरवाह, दृश्य को स्थायित्व की भावना देते थे, जैसे कि एक हजार साल से कुछ भी नहीं बदला था।

लेकिन फिर वह कहती है, 'हमें सबसे ज्यादा आश्चर्य हुआ कि आसपास के लोग स्थानों और दिशाओं और बसों आदि के बारे में बहुत कुछ नहीं जानते थे और इसलिए वे बहुत मदद नहीं कर रहे थे, हालांकि पुराने शिष्टाचार और मदद करने की इच्छा अभी भी सबूत में बहुत अधिक थी। वह आगे कहती हैं, 'हमें वह रिफेक्टरी भी नहीं मिली जहां हमने एक साल से अधिक समय तक अपना दैनिक भोजन खाया, न ही मेरा अपना राजनीति विभाग। हमें अपने समय के संकाय या साथी छात्र के किसी भी सदस्य से मिलने की उम्मीद नहीं थी, निश्चित रूप से, इतने लंबे अंतराल के बाद। कुल मिलाकर, यात्रा वृत्तांत एक दिलचस्प पठन बनाता है और केंद्र को समृद्ध करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान है।

### विज्ञान कॉर्नर

पॉडकास्ट: 'अनुरंजन प्रसाद के साथ साक्षात्कार' केंद्र के लिए अपनी तरह का पहला था। यह जुलाई-सितंबर की अंतिम तिमाही में प्रकाशित हुआ था। साक्षात्कार में बीआईटी, मेशरा (रांची) से बीटेक (मैकेनिकल) के साथ एक इंजीनियर के रूप में अनुरंजन प्रसाद के करियर को कवर किया गया। पॉडकास्ट में उनके द्वारा उनके विभिन्न कार्यों में किए गए योगदान को सामने लाया गया है, जिसमें 1969 से लेकर अब तक की अवधि शामिल है।

अपने विभिन्न कार्यों के कारण, वह विनिर्माण संयंत्रों और उनके रेलवे के निर्माण में मदद करने के लिए कई देशों में गए। उनके विचार में, प्रौद्योगिकी ने इंजीनियरिंग के हर पहलू में क्रांति ला दी है। भारतीय रेलवे को भी इन बदलावों का लाभ उठाने हुए खुद को काफी अपग्रेड करने की जरूरत है। जैसा कि उन्होंने स्पष्ट रूप से देखा, भारतीय रेलवे अन्य देशों से पीछे है और उन्हें अंग्रेजों से जो कुछ भी विरासत में मिला है, उससे संतुष्ट नहीं रहना चाहिए।

## कविता

### 'नन्ही सी जान, बेइंतिहा खूबसूरत'

नन्ही सी जान, बेइंतिहा खूबसूरत,  
दर्पण में झाँकती और इतराती,  
अपनी खूबसूरती पर, रंगीन पंखों पर,  
पेड़, पौधे, टहनियां और डाली,  
इनका है घर मकान,

फ्लोरा - फौना , जैव विविधता,  
यही तो है प्रकृति की शान,  
पर अनियंत्रित होती हमारी जनसंख्या  
शहरीकरण का भारी दबाव,  
और मकान, और मकान, और मकान,

अत्याधिक कार्बन उत्सर्जन,  
जंगलों का कटना,  
ध्रुवो पर हिमखंडों का लगातार  
पिघलना,  
असहनीय होता वातावरण हमारा  
उखड़ती साँसे, दम तोड़ता इंसान,



(Picture by M. R. Sinha)

वर्षा ऋतु भी प्रलय साथ लाती,  
विनाश की है भारी चेतावनी,  
प्रकृति को अब और अधिक न सता  
ऐ मानव, अब भी संभल जा,  
अपने अस्तित्व के लिए ईमानदार बन,

हरियाली, हरियाली, और  
हरियाली बढ़ा,  
जी जान से अपनी धरा को बचा  
ले पर्यावरण सुधर जायेगा,  
तेरा जीवन, मानव फिर बच जायेगा,  
तेरा जीवन, मानव फिर बच जायेगा ।

मनोज रंजन सिन्हा